



International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519

IJSR 2024; 10(1): 01-06

© 2024 IJSR

www.anantaajournal.com

Received: 02-11-2023

Accepted: 05-12-2023

चंदा रानी

शोधार्थी, पीएच. डी. दक्षिण भारत
हिंदी प्रचार सभा, मद्रास, तमिलनाडु,
भारत

हिंदी उपन्यासों में पंजाबी धर्म व संस्कृति

चंदा रानी

प्रस्तावना

धर्म, मज़हब, सम्प्रदाय अथवा मत एक ही अर्थ के द्योतक होते हैं। धर्म किसी न किसी रूप में सभी मानव समाजों में विद्यमान होता है। चाहे वह समाज प्राचीन हो या नवीन, पिछड़ा हुआ हो या अत्यधिक विकसित। प्राचीन काल से ही मानव जीवन से धर्म का महत्वपूर्ण सम्बन्ध रहा है। विभिन्न समाजों में व विभिन्न युगों में धर्म का भिन्न-भिन्न स्वरूप रहा है। धर्म युगानुकूल रूपान्तरित होता रहा है। धर्म का अर्थ, परिभाषा और स्वरूप धीरे-धीरे बदलता जा रहा है। परन्तु वास्तव में धर्म से क्या तात्पर्य है, स्वातंत्र्योत्तर उपन्यास साहित्य में धार्मिक परिवेश को समझने के लिए यह जानना आवश्यक है।

धर्म क्या है? यदि शब्दों का विश्लेषण किया जाए, तो कहना पड़ेगा कि धर्म मानव का सदगुणों से अदभुत वह पूंजी भूत तत्त्व है, जिसको मान कर मनुष्य सुख, शान्ति, आनन्द और तृप्ति प्राप्त करता है। “धर्म” का शाब्दिक अर्थ है धारण करने वाला। इस अर्थ में धर्म का प्रयोग ऋग्वेद में (अतो धर्महि धारनेय-ऋग्वेद 1.22.18) हुआ है। वैदिक साहित्य में भी धर्म को धारण करने के अर्थ में ही कहा गया है। वृहदारण्यक उपनिषद्कार ने धर्म एवं सत्य को एक ही माना है। महाभारतकार के अनुसार धर्म वही है जो धारण क्रिया से संयुक्त है। महाभारत में धर्म से ही अर्थ और काम की सिद्धि कही गई है। (धर्मार्याव कामशच तधर्मः किये तेव्यतेमहाभारत, 18.5.62) मनुस्मृति में धर्म का प्रथम लक्षण “धृतः” स्वीकार किया गया है। इस प्रकार धर्म वह है जो हम सबको एवं सम्पूर्ण विश्व को धारण करता है। यह एक सर्व-स्वीकृत एवं सर्वव्याप्त विधान है। अपने विस्तृत अर्थ में धर्म वह है जिसे हम धारण करते हैं। समय और परिस्थिति के अनुसार जो व्रत लेते हैं। दूसरे शब्दों में मानव के कर्तव्य ही मानव का धर्म है। रूचि तथा विचार-विभिन्नता के कारण धर्म में भिन्नता हो सकती है, परन्तु उसकी परिभाषा या स्वरूप में कदापि अन्तर नहीं हो सकता। अर्थात् धर्म का अर्थ मानव में सद्गुण पैदा करना और दुष्प्रवृत्तियों का निराकरण करना है।

पारम्परिक रूप में धर्म जीवन का अभिन्न अंग है। तभी सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का मूलाधार भी धर्म ही है। विश्व के मानव मात्र का साध्य एक है और वह है परलोक में मुक्ति की इच्छा और इस लोक में आनन्द और सुख की प्राप्ति। इस साध्य को प्राप्त करने के लिए मार्गों की भिन्नता हो सकती है, परन्तु साध्य की भिन्नता नहीं हो सकती। यद्यपि धर्म अलग-अलग हैं तथापि उन सबका लक्ष्य एक ही है। तभी धर्म यह कहते हैं कि मानव मात्र पर दया करो। प्राणी मात्र से प्रेम का व्यवहार करो। सबका कारण-करण परमात्मा है। वह सर्वव्यापक है। तात्पर्य यह है कि लक्ष्य या साध्य एक है और उस लक्ष्य या साध्य को पाने के लिए साधन अलग-अलग हो सकते हैं।

भारतीय समाज में धर्म का उच्च एवं प्रमुख स्थान रहा है। प्रत्येक भारतीय में धार्मिक चेतना किसी न किसी रूप में अवस्थित रही है। धर्म वह सामाजिक संस्था है जो पारलौकिक सत्ता तथा व्यक्तियों के पारस्परिक सम्बन्धों के विचारों पर आधारित होती है। मनुष्य की अलौकिक सत्ता के प्रति जिज्ञासा की भावना के फलस्वरूप धार्मिक अवधारणाओं का जन्म हुआ।

Corresponding Author:

चंदा रानी

शोधार्थी, पीएच. डी. दक्षिण भारत
हिंदी प्रचार सभा, मद्रास, तमिलनाडु,
भारत

भारतीय समाज में मनुष्य जीवन पर्यन्त धार्मिक मान्यताओं से जुड़ा रहता है। इस समाज में धर्म को मानवीय भावनाओं का उद्गम स्रोत माना जाता है “विभिन्नता में एकता” इसी कारण भारतवर्ष की सबसे बड़ी विलक्षणता मानी जाती है। आदिम युग से ही “धर्म” मानव का अवलम्बन व मार्ग दर्शक रहा है। उचित अनुचित का निर्णायक तत्व भी धर्म ही है।

हिंदी उपन्यास साहित्य में विभाजन से पूर्व का जो पंजाबी समाज चित्रित किया है, उसमें बहुधा पंजाब के शान्त और सद्भावनापूर्ण धार्मिक वातावरण का ही चित्रण किया है। “हार से बिछुड़ी” में हिन्दू तथा मुस्लिम धर्मों का चित्रण है। दो हिन्दू तथा मुस्लिम परिवार दिखाए गए हैं। उनमें कुछ कटुता अवश्य व्याप्त है, परन्तु वह धर्मान्धता के कारण नहीं, बल्कि परिवार की इज्जत के हनन के कारण है। “मित्रो मरजानी” में पंजाब के सिक्ख परिवार का चित्रण किया गया है। इस परिवार के द्वारा पंजाब का सम्पूर्ण सिक्ख धर्म हमारे सामने स्पष्ट हो जाता है।

“जिन्दगीनामा” एक अत्यन्त विस्तृत उपन्यास है। उसमें पंजाब में रहने वाले हिन्दू, मुस्लिम तथा सिक्ख धर्म के लोगों का बखूबी चित्रण किया गया है। “गाँव में हिन्दू-मुस्लिम और सिक्ख लोग कोई बैर भाव या भेदभाव न बरतते हुए प्यार से मिल जुल कर रहते हैं। शाहों के परिवार में पहले करतारो फिर राज्यों बेटी की भाँति रहती है।” कहीं कोई धार्मिक कटुता दिखाई नहीं पड़ती। बल्कि उपन्यास जुलूम के खिलाफ सभी धर्मों के लोग मिल कर संघर्ष करने के लिए उठ खड़े होते हैं। “शाहजी हिन्दू धर्म के हैं, परन्तु मुस्लिम सिक्ख सभी धर्मा में लोग समान रूप से उनकी इज्जत तथा मान करते हैं।” सभी धर्मों के लोग तीज-त्योहार मिल-जुल कर मनाते हैं हिन्दुओं के दशहरे आदि पर्व पर सभी पंजाबी लोग खुशियाँ मनाते हैं। इसी प्रकार तीज आदि धार्मिक पर्व भी स्नेह से मनाते हुए चित्रित किए गए हैं, चाहे वे किसी भी धर्म के क्यों न हों।

“तमस” उपन्यास में धार्मिक भावना पशु-पक्षियों तक में दर्शायी गई है। सरदार हरनाम सिंह की मैना भी रोज की रटी हुई गरदान बोल उठती है, “बन्तौ रब्ब राखा, सरबद दा रब्ब राखा।”

यद्यपि धर्म के द्वारा व्यक्ति में नैतिकता, सद्भावना, शान्ति एवं परोपकारिता आदि सदगुणों का निर्माण होता है, परन्तु आज समाज में धर्म का रूप विकृत हो गया है। आज धर्म की आड़ में घृणित से घृणित कार्य भी किया जा रहा है। धर्म के नाम पर जनता का धार्मिक शोषण निरन्तर किया जा रहा है। हिंदी उपन्यासों में इन्हीं धार्मिक आडम्बरों का विकृत काम प्रस्तुत किया गया है।

हिंदी उपन्यासों में धर्मान्धता के विषाक्त रूप को अनेक कृत्तियों में चित्रित किया गया है। इन उपन्यासकारों ने हिन्दू तथा मुस्लिम दोनों धर्मों के अन्धेपन की ओर संकेत किया है। एक-दूसरे धर्म के प्रति शक, अविश्वास और भय ने ऐसे साम्प्रदायिकता के वातावरण में आग में घी का काम किया। ऐसे में ये धर्म के ठेकेदार दूसरे की जान की भी परवाह नहीं करते। तमस में इसका नम्र चित्रण हुआ है। “शाहनवाज का मजहबी जुन्नू मिलखी को मार कर उतरता है तो बलदेव सिंह अपनी माँ को तुर्की द्वारा मार दिया जाने की आशंका के कारण खून का बदला लेने का निश्चय बूढ़े सुहार करीम बख्श की हत्या करके पूरा करता है।”

बादशाह की धर्मान्धता के प्रति तो केवल हिन्दुओं को ही नहीं बल्कि मुसलमानों में भी घृणा का भाव था - “वह भी बादशाह की अन्धनीति

से दुःखी था, रह-रह कर उसे बेईमान काजियो पर क्रोध आ रहा था। खुदा के प्यारो पर किया जाने वाला अत्याचार उसे सहन न था, किन्तु असर्मथ चोट खाए सर्प की भान्ति भीतर ही भीतर विष घोल रहा था, और अपने खुदा के हुजुर में अन्यायी के नाश की दुआ करता था।” “मजहब ने अन्धा कर दिया था बादशाह को। कौन सी शरीअत कहती है कि तलवार के जोर पर मजहब फैलाया जाए - हिन्दू और मुसलमान में ऐसे फर्क किया जा रहा है, जैसे दोनों के खून की रंगत में कोई फर्क है।” धर्मान्धता के इस भयानक व घृणित रूप का व्यक्ति और समाज पर प्रभाव दिखाने का इन उपन्यास में गोलड़ा शरीफ पीर के आगमन को लेकर मुस्लिम सम्प्रदाय की धर्मान्धता का चित्रण किया गया है। पीर और औलियों के बारे में सामान्य जनता की बेबुनियाद धारणाओं का वर्णन भी है। “लोगों को विश्वास है कि पीर साहब मस्जिद नापाक किए जाने के कारण आए हैं और जो आए है तो जुम्मा तक तो रूकेंगे ही। बाउज तो करेंगे ही, जो आए हैं तो शहर को पाक करके ही जाएंगे।”

यशपाल के “झूठा सच” में हिन्दू स्त्रियों की इसी धार्मिक आस्था चित्रण किया गया है। “एक बड़े कमरे में बन्दी, पीड़ित एवं त्रस्त हिन्दू स्त्रियाँ अपना पूजा पाठ नहीं छोड़तीं। इस पर तारा सोचती है, भगवान अपने कर्म में शिथिल हो सकता है, स्त्रियाँ उसकी पूजा में शिथिल नहीं हो सकतीं। भगवान से इतनी उपेक्षा पाकर भी इनके मन में उसके प्रति क्रोध नहीं है।” धार्मिक रूढ़िवादिता ने मनुष्य को कूर बना दिया है। इसी विकृत दृष्टिकोण के कारण मनुष्य विकास की सम्भावनाओं पर प्रश्न चिन्ह लग गया है। “पार्टी कामदेह” में भावरिया बचपन में सिगरेट पी लेता है तो उसकी शुद्धि “गोमूत्र चाख कर तथा गरूड़ पुराण की कथा सुनकर की जाती है।”

धार्मिक शोषण के फलस्वरूप केवल वर्ण व्यवस्था का ही जन्म नहीं हुआ बल्कि आधुनिक धर्म का स्वरूप तो समाज को भाग्यवादी बना रहा है। लोगों में धर्म-कर्म, स्वर्ग-नरक, लोक परलोक, अच्छाई बुराई के भाव जगाता है। आज मन्दिर बन गए हैं। अशक तो “धर्म” को पूँजीवान लोगों की धरोहर बताते हैं “यह धर्म क्या पूँजी का दूसरा रूप नहीं पूँजी ही की तरह यह हजारों गरीबों की रक्त स्वेद की कमाई पर फूल-फूल कर मोटा नहीं हो रहा क्या?”

हिंदी उपन्यासकारों ने तो राजनीतियों के मुख पर से भी धर्म का मुखौटा उतार कर उनका पर्दाफाश करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। ये राजनीतिज्ञ खदर धारण कर बाहर से जोगी बनने का ढोंग रचते हैं और भीतर से शोषण कर्ता के भयावह रूप में होते हैं। “गर्म राख का एक देशभक्त कहता है “मुझे महात्मा गाँधी से यही शिकायत है कि उन्होंने खादी को राष्ट्रीय भूषा बना कर जहाँ किसी समय मांचेस्टर और संकाशायर को भारी धक्का पहुंचाया, वहाँ देश के लम्पटों का काम सदा के लिए आसान कर दिया। नख से शिख तक खादी में सुसज्जित किसी व्यक्ति को देख कर आदमी पहले उसे भलामानुस समझता है, फिर कुछ और परन्तु अब मैंने इस सिद्धान्त को उलट दिया है और इसीलिए भूषा को भी।”

निःसंदेह धार्मिक भावनाओं की ओट में रानीतिज्ञों ने जो भारत-विभाजन के समय रक्त पात करवाया उसका यथार्थ चित्रण हिंदी उपन्यासों में हुआ है। धर्म के नाम पर शोषण होता है, हत्याएँ होती हैं, रक्तपात होता है, स्त्रियों से बलात्कार होता है। अपने धर्म की श्रेष्ठता सिद्ध करने के प्रयास

में दूसरे धर्म को समूल रूप में नष्ट कर देना चाहते हैं। “झूठा सच” की कनक सोचती है - “धर्म के भेदों का झगड़ा कब और कहां जाकर समाप्त होगा। वह हकीकत राय और गुरु गोविन्द सिंह के मासूम बच्चों को ले मरा। उसी झगड़े के कारण लोग लाहौर छोड़ कर बेघर बार हो गए।”

पंजाबी संस्कृति बहुत पुरानी है। यह वेदों की रचना से भी पहले की है, क्योंकि वेदों की रचना पंजाब की धरती पर हुई थी। इस संस्कृति का आरंभ हम उस समय से मान सकते हैं जब द्रविड़ जाति के लोगों ने इस धरती पर रहना शुरू किया। पंजाबी संस्कृति एक बहुरंगी संस्कृति है। आर्यों की आमद से अंग्रेजों की सत्ता तक यूनान, कुषाण हूण, मंगोल, तुर्क, पठान इत्यादि कई बाहरी लोगों ने पंजाब पर हमले किए तथा इसपर आकर बसे। इनकी वजह से यहाँ का रहन-सहन कार्य व्यवहार तथा सोच में तबदीली होती रही है, इसलिए पंजाबी संस्कृति को एक मिश्रित संस्कृति कहा जा सकता है।

“हिंदी भाषा का शब्द संस्कृति सम + कृ + कतिन शब्दों का समावेश है, इसका भाव परिष्कार, तैयारी तथा पूर्णता है। संस्कृति के लिए पंजाबी भाषा में ‘सभ्याचार’ तथा अंग्रेजी में ‘Culture’ शब्दों का प्रयोग होता है। इन शब्दों के अर्थ फलना-फूलना या विकास की तरफ अग्रसर होना है।

1. संस्कृति एक जटिल सामग्री है, जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, कानून, प्रथा तथा समाज के सदस्य के रूप में मनुष्य द्वारा अर्जित अन्य दूसरी समर्थताएँ सम्मिलित है। - टायलर
2. “संस्कृति मनुष्य द्वारा स्वयं को अपने पर्यावरण के साथ अनुकूलित करने एवं अपने जीवन के ढंगों को उन्नत करने के प्रयत्नों का सम्पूर्ण योग है।”- क्योनिय
3. समाज की संस्कृति का अर्थ है समाज की सम्पूर्ण जीवन विधि। - ओटावे
4. A culture is an integrated system of behavior with its supporting ideas and values. - Hurton
5. Culture means some inner growth in a man, his behaviors to others, his capacity to understand people and to made one self understood by others. - Pt Jawaharlal Nehru.

संस्कृति किसी भी समाज की मर्यादा है, जिसके सृजन में खून का रिश्ता, विवाह, आपसी सम्बन्ध, परिवार, अनुशासन, सामाजिक मेल-मिलाप, खेल, मनोरंजन, हार - श्रृंगार, पेशा, पेड़-पौधे, पानी, पहाड़ इत्यादि सहायक होते हैं।”

पंजाब में गुरु साहिबान की आध्यात्मिक चिन्तन प्रणाली ने पंजाबी सभ्याचार को पवित्रता की एक विशेष बख्शीश दी है। इस चिन्तन प्रणाली द्वारा पंजाबी उपासना, जो कि पंजाबी सभ्याचार का एक महत्वपूर्ण अंग है, उसे आडम्बर तथा प्रपंच से काफी हद तक बचा कर रखा।

पंजाब ने शिव तथा शक्ति, प्रभु तथा माया, पुरुष तथा प्रकृति की दो अध्यात्मवादी शक्तियों को हमेशा ही अपनाया है। यहाँ यह मानते हैं कि जीवात्मा प्रकृति का एक रूप है जो अपने प्रभु प्यारे के मिलाप के लिए हमेशा ही तत्पर रहती है। लेकिन उसके रास्ते में माया रूपी अड़चन हमेशा ही आती है। पति परमेश्वर का मिलाप ही जिज्ञासु का लक्ष्य तथा जीवन का आदर्श होता है। परमेश्वर के प्रेम को जीव तभी तरसता है जब

वह अध्यात्म के मार्ग पर अग्रसर हो रहा हो। गीता में अध्यात्म को बहुत ही ऊँची पदवी प्राप्त है। गीता में इसे “अध्यात्म विद्या विद्यानामा” कहकर सम्बोधित किया गया है। (अ. 10:32)

असल में मूल कहते हैं जड़ या सिर को। यह आध्यात्मिक मान्यता है कि जब सारी सृष्टि की उत्पत्ति एक ही ईश्वर से हुई है तो वही ईश्वर (वाहेगुरु) सब चीजों का मूल है। इसी लिए गुरुबाणी में वाहेगुरु जी को बहुत बार मूल शब्द से अलंकृत किया गया है जैसे:

“मूल मन्त्र हरि नाम रसायन
कहु नानक पूरा पाया।।”
(मारू म. 1/1040)
औखद मन्त्र मूल मन एकै
मन विस्वास प्रभु धारिया।।”
(धना श्री म. 5/675)

दुनिया के तकरीबन सभी धर्म यह मान्यता रखते हैं कि ईश्वर एक है। पंजाब भी इसी को सच मानता है तथा इसी का अनुसरण करता है कि

“एक ओंकार, सतनाम, करता पुरख
निरभौ, निरवैर, अकाल मूरति अजूनी सैभं” ।

उस प्रियतम के मिलाप के लिए जीवात्मा जन्मों जन्म भटकती है, कर्म बन्धन में फंसती है। अपने बुरे कर्मों के प्रभाव को समाप्त करने के लिए वह नाम स्मरण करती है, दूसरे जीवों की सेवा करती है, किसी दूसरी आत्मा को कष्ट नहीं पहुँचाती, साधु की संगति करती है, गुरु की शरणागति होती हुई अमृत रस पान करती है-

‘गुरु का सबद महा रस मीठा,
ऐसा अमृत अंतर डीठा।’
(प्रभाती म 1)

अध्यात्म में प्रभात का भी बहुत अधिक महत्व है। जब सारी सृष्टि नयी सुबह के स्वागत के लिए तैयारी कर रही होती है, तो जीव उस समय उठ कर, शुद्ध होकर अगर प्रभु स्मरण (सिंमरण) करता है, तो वह जल्द ही उस ईश्वर से साक्षात्कार करता है। ‘गुरुबाणी में इस समय को अमृत बेला’ तथा शास्त्रों में ‘ब्रह्म मुहूर्त’ कहा गया है।

‘अमृत बेला सचु नाओं वडियाई विचारा।’ (जपुजी)
‘नाओ प्रभाते शब्द धियाइयै
छोडहु दुनि परीता
प्रणवत् नानक दासन दासा
जग हारिया तिन जीता।’
(प्रभाती म. 2)

‘जब साधक का मन गुरु की कृपा से अध्यात्मिक बल को प्राप्त करता है तो काल का कोई ज़ोर नहीं चल सकता।’

‘काल, बेकाल भरो देवनि
मन राखिया गुर ठाये
नानक अवगुण शब्द जलाये
गुण संगम प्रभु पाये।’

संस्कृति किसी भी विशेष देश अथवा समाज का दर्पण होती है। उस विशेष समाज का रहन-सहन एवं वहां की सम्पूर्ण झांकी उस प्रदेश की लोक संस्कृति कहलाती है। पंजाबी संस्कृति खुली फिजाओं वाली सरबत (सबका) का भला माँगने वाली, प्राकृतिक तथा बलवान है। पंजाबी लोक संस्कृति की विशेषता सेवा करना, दूसरों के काम आना दुःखी की मदद करना, कमजोर की रक्षा करना तथा बहादुरी के साथ जुलूम से टक्कर लेना है। सिक्खों के दशम गुरु श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने फरमाया है-

‘सवा लाख से एक लड़ाऊँ
तभी गोबिन्द सिंह नाम धराऊँ ॥’

पंजाबी लोक संस्कृति में अतिथि का आदर सम्मान करना, उसे तरह-तरह के व्यंजन खाने को देने, उसके आराम का विशेष प्रबन्ध करना तथा अन्त में घर की दहलीज तक उसे विदाई देना पंजाब के हर घर में है। पहले-पहले तो लोग गाँव की सरहद तक अतिथि को विदाई दिया करते थे परन्तु अब दौड़-भाग तथा व्यस्तता भरे जीवन में घर के बाहर तक छोड़ने का ही प्रचलन रह गया है।

अच्छा खाना, अच्छा पहनना तथा शान से जीना इस लोक संस्कृति की पहचान है। यही कारण है कि इस लोक संस्कृति के लोक नाच भांगड़ा, गिद्दा, सम्मी, झूमर इत्यादि रंगीले तथा उत्साह से परिपूर्ण हैं। सभी लोक पर्व बड़े प्यारे तथा लोक-गीतों से श्रृंगार होते हैं। इस लोक संस्कृति का उद्देश्य है

‘दो पैर घट तुरना
पर तुरना मड़क दे नाल ।’

अर्थात् दो कदम कम चलना मन्जूर है परन्तु चलना शान से ही है। यहाँ का पहरावा, गहने अपने आप में विलक्षण चमक रखते हैं। ‘पंजाबी भारी भीड़ में भी अकेला ही पहचान में आ जाता है। इसीलिए, पंजाबी लोक संस्कृति अपने प्राकृतिक नजारों की तरह, गाते हुए दरियाओं की तरह उपजाऊ धरती की तरह रंगीली है।’ जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि किसी भी समाज की सम्पूर्ण झांकी वहां की लोक संस्कृति है, परन्तु यहां हम केवल लोक संस्कार, पहरावा तथा पर्व की ही बात करते हुए सम्पूर्ण पंजाबी झांकी को प्रस्तुत करने की कोशिश करेंगे।

यह रस्म सिक्खों में पाई जाती है। वैसे तो यह रस्म 5 साल के बाद कभी भी की जा सकती है परन्तु ज्यादातर लोग इसे 14-15 साल के बाद ही करते हैं क्योंकि इस रस्म में लड़के को सिर ढकने के लिए लगभग मीटर की पगड़ी पहनाई जाती है। यह पगड़ी लड़के को उसके मामा द्वारा दी जाती है परन्तु अगर किसी लड़के का मामा नहीं होता तो गुरुद्वारे के भाई साहिब (पाठी) उस लड़के को पगड़ी देते हैं। उसके बाद बालक हमेशा

अपने सिर पर उस पग (पगड़ी) को अपने सिर पर सजाते हैं। यह पग इज्जत, मर्यादा, अनख का सूचक है। तभी तो बहन अपने वीर (भाई) के लिए निम्न लोकगीत गुनगुनाती है।

‘कीकली कलीर दी
पग मेरे वीर दी॥’

रिश्तेदार लड़के को शगुन डालते हैं, तथा कई पगड़ियां भी देते हैं। लड़के की मां अपने भाइयों तथा भाभियों को जो विशेष दस्तार लेकर आते हैं, उन्हें सूट देती है तथा शगुन भी डालती है।

सिक्खों में लड़का विवाह से पहले कभी भी ‘अमृत छक’ कर यानि सिक्ख धर्म की मर्यादानुसार पाँच ‘क’

क-कृपाण, क-कड़ा, क-कछहरा, क-कंधा, क-केश
से युक्त होकर गुरुद्वारे में जाकर शादी कर सकता है।

लोक पर्व वे पर्व तथा त्यौहार हैं जो किसी विशेष समाज के सामूहिक लोगों द्वारा मिल कर मनाये जायें। ये पर्व भी दो प्रकार के हैं। एक तो हैं लौकिक पर्व तथा दूसरे हैं धार्मिक पर्व। लौकिक पर्व जैसे होली, बसन्त पंचमी, लोहड़ी इत्यादि तथा धार्मिक त्यौहार हैं; जन्माष्टमी, दशहरा, दीवाली, क्रिसमिस, राम नौमी, ईद-उल-फितर इत्यादि। सिक्ख गुरुओं के पर्वों पर जिन्हें ‘गुर-पर्व’ कहा जाता है, समूह पंजाबियों के हृदयों से आदर सम्मान की भावना उमड़ती है।

इन पर्वों के अवसरों पर जगह जगह मेले लगते हैं। रंग बिरंगे तथा तरह-तरह के खिलौनों के स्टाल, चमचमाती चुड़ियों के स्टाल, कई प्रकार की स्वादिष्ट मिठाई तथा झूले आज भी इन त्यौहारों की शोभा तथा आनन्द बढ़ा देते हैं। बच्चे से लेकर बूढ़े तक हर कोई अपने तरीके से खुशी का इजहार करता है। खाना-पीना, घूमना तथा नयी-नयी चीजें लेना त्यौहारों पर आकर्षण का केन्द्र होते हैं। स्त्रियाँ खूब सज-धज कर इन मेलों में शिरकत करती हैं। तभी तो एक गबरू (जवान लड़का) मुटियार को कह ही देता है

मेला वेखदीये मुटियारे
मेला तैनु वेखदा।

विभिन्न लोक पर्वों को विभिन्न तरीके से मनाया जाता है। साल में सबसे पहले आता है लोहड़ी का त्यौहार। देसी महीनों के अनुसार लोहड़ी पोह (देसी महीने का नाम) के अन्त वाले दिन में मनायी जाती है। यह एक ऐसा त्यौहार है जो सुबह से लेकर रात के अन्तिम पहर तक पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। लोहड़ी के कई दिन पहले ही छोटे बच्चे इकट्ठे हो कर घर से दूसरे घर जाकर मिठाईयाँ, पैसे, खास तौर पर मूँगफली, रेवड़ियाँ, फुल्ले (पाप कान) इत्यादि माँगते हैं जिसे लोहड़ी माँगना कहते हैं। फिर वे सभी मिल कर इन सभी चीजों का आनन्द लेते हैं। इस त्यौहार की खास बात यह है कि माँगने वालों को कोई भी खाली नहीं भेजता या उनके लिए अपना किवाड़ बन्द नहीं करता बल्कि अपने

सामर्थानुसार उनकी झोली भर कर ही भेजता है। लोहड़ी माँगने वाले माँगते वक्त एक विशेष गीत गुनगुनाते हैं।

सुन्दर मुंदरिये, हो
तेरा कौन विचारा, हो
दूल्हा भट्टी वाला, हो
दूल्हे ने धी वियाही, हो
सेर शक्कर पाई, हो
कुड़ी तां लाल पटाखा, हो
कुड़ी दा सालू पाटा, हो
साडे कदमा हेठां रोड़
सानू छेती - छेती तोर
साडे पैरा हेठ सलरिया
असी केडे वेले दीया आईयाँ
दे मायी लोहड़ी
तेरी जीवे ओड़ी।
विसाख माह (देसी महीने का नाम) की संक्रांति को वैसाखी का त्यौहार मनाया जाना है।

वैसाखी पंजाब का सुप्रसिद्ध त्यौहार है। पकी हुई कनक (गेहूँ) की कटाई इस दिन आरम्भ की जाती है। तभी तो एक मुटियार, गभरू (नौजवान लड़का) से कहती है।

कनका दी मुक गयी राखी
ओ जट्टा, आई वैसाखी।
विसाखी एंव वैसाखी किसान की कड़ी मेहनत का मुआवजा लाती है। कृषक लहलहाती पकी फसलों को देख कर झूम उठता है। वह आर्थिक समृद्धता से भरपूर दिनों के सपने लेता है। पूरी फिजा में खुशी का माहौल होता है। इस दिन यह गीत गूँजता है।

कनका दीयां फसला पक्कीयां ने
जट्ट खेता दे विद्य गजदा ए
पकवान पकाऊदीयां जट्टियां ने।

यह त्यौहार सावन महीने की चाँदनी तीज से आरम्भ होता है तथा 13 दिनों में समाप्त होता है। वैसे तो यह मुटियारों एंव नौजवान स्त्रियों का त्यौहार है परन्तु इस त्यौहार को सभी वर्ग की स्त्रियां बड़े हर्षोल्लास से मानती हैं। नविवाहित तथा नौजवान स्त्रियाँ मेंहदी लगवाती है, चूड़ियाँ पहनती है, खूब भारी-भरकम सूट पहने जाते हैं, और सारी मिल-जुल कर किसी एक जगह इकट्ठी होकर वृक्ष पर पींघ (झूला डालती है) तथा गीत गाती है-

आ वणजारिया बेह वणजारिया
कित्थे कु तेरा घर वे
चाद बलौरी वंगा मेरे
पावां झोली जर वे
पिंड दीयां कुड़ियाँ कर ला कट्टियाँ

क्यों फिरदै दर-दर वे
दिन ती दे थोड़े रहि गये
जाना सुहरे घर वे
भीड़ी वंग बचा के चाड़ी
मैं जावांगी मर वे
रंगली बोतल नू
किसे बहाने भर वे।

अंत में कहा जा सकता है कि सिक्ख धर्म के लोग गुरु-पर्व बड़े धूम धाम से मनाते हैं। सिक्ख धर्म के 10 गुरुओं के जन्मोत्सव तथा शहीदी दिवस को गुरु-पर्व कहा जाता है। यू तो दसों गुरुओं के प्रकाश दिवस (जन्म दिवस) तथा शहीदी दिवसों पर आखण्ड पाठ, नगर कीर्तन, लंगर का प्रबन्ध किया जाता है। परन्तु श्री गुरु नानक देव जी (प्रथम गुरु) का जन्म दिवस बहुत ही धूम-धाम के साथ मनाया जाता है। ये दो गुरु पर्व पंजाब में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में, जहाँ कहीं भी सिक्ख धर्म के अनुयायी रहते हैं, वे धूम-धाम से मनाते हैं। कीर्तन दरबार सजाये जाते हैं। कई दिन पहले प्रभात फेरियां निकाली जाती हैं जिसमें लोग गुरु साहिबान का गुणगान करते हैं। गुरुद्वारों को दुल्हन की तरह सजाया जाता है। गुरु पर्व से एक या दो दिन पहले शोभा यात्रा निकाली जाती है। 'अमृतसर शहर के निर्माता श्री गुरु रामदास जी का जन्म दिवस भी अमृतसर में बहुत शान से मनाया जाता है।' श्री गुरु अरजन देव जी का शहीदी दिवस भी गुरु-पर्व के रूप में बहुत महत्ता रखता है। इस दिन जगह जगह ठण्डे पानी की, मीठे पानी की 'छबील' लगायी जाती है। अमृतसर में 'शहीदां दे' गुरुद्वारे में बहुत भारी मेला लगता है। इसके अतिरिक्त दीवाली, दशहरा, किसमस, ईद, जन्माष्टमी, राम नवमी, करवा चौथ, रारवी, भैया दूज, नवरात्रे इत्यादि सभी त्यौहार जैसे पूरे भारत में मनाये जाते हैं। बिल्कुल वैसे ही पंजाब में भी मनाये जाते हैं। त्यौहारों में, 'खुशी के ये मौके वंश की बढ़ोतरी के सूचक हों, या सामाजिक रीति-रिवाजों से सम्बन्धित हों या ऋतुओं, मेलों आदि से सम्बन्धित हों, सामूहिक रूप में औरतें गिद्धे का माहौल बना ही लेती हैं। उसी प्रकार मर्द भी भांगड़ा (पुरुषों का लोक नृत्य) से पीछे नहीं हटते। (उपरोक्त आखिरी दो वाक्य गुरु-पर्व से सम्बन्धित नहीं हैं।)

संदर्भ

1. कड़ियां - भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1979.
2. काले-कोस - बलवन्त सिंह, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद, 1973.
3. जिन्दगीनामा - जिन्दारुख, कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1979.
4. झरोखे - भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1976.
5. झूठा-सच -1, वतन और देश, यशपाल, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1980.
6. झूठा-सच -2, देश का भविष्य, यशपाल, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद, 1980.
7. तमस - भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1988.
8. दादा कामरेड - यशपाल, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1984.

9. पंजाब प्रांतीय हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पं. चन्द्रकान्त बाली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1962.
10. पंजाबी लोक गीत परंपरा - विक्रमसिंह खुमन, पंजाबी राईटर्ज कोआपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड, 1986.
11. भारतीय धर्म और संस्कृति - सं. डॉ. शशि तिवारी, मैत्री महाविद्यालय, नई दिल्ली, 1986.
12. The Punjab Story, Amarjit Kaur, Roli Books International; c1985.
13. The Punjab Tradition, P.H.M. Van der Dungen, George Allen and unwin Ltd., London; c1972.
14. Sikhism and its Indian Context (1469-1708), W. Owen, D.K. Agencies (Indian Edition; c1984.